भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी भाषा की भूमिकाः महात्मा गांधी के विशेष संदर्भ में

पुष्पेंद्र कुमार

दिल्ली विश्वविद्यालय

शोध सारांश

यह शोध-लेख भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी भाषा की भूमिका का विश्लेषण करता है, विशेषतः महात्मा गांधी के संदर्भ में। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि हिन्दी भाषा ने संप्रेषण का माध्यम होने के साथ-साथ राष्ट्रीय चेतना, जनसंगठन और सांस्कृतिक एकता के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिन्दी की जनसुलभता और व्यापकता ने स्वतंत्रता संग्राम को अभिजात वर्ग से निकालकर जनसाधारण तक पहुँचाने में सहायता की। गांधीजी ने हिंदी को एक रणनीतिक उपकरण के रूप में अपनाया, जिसके माध्यम से उन्होंने सत्याग्रह, स्वदेशी और असहयोग जैसे विचारों को सरल एवं बोधगम्य रूप में प्रस्तुत किया। उनके लेखन, भाषणों और पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी ने जनसंचार का एक प्रभावी माध्यम बनकर आंदोलन को व्यापक जनाधार प्रदान किया। साथ ही हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता ने गांधीवादी विचारधारा को सांस्कृतिक और वैचारिक स्तर पर सुदृढ़ किया। हिंदी भाषा और महात्मा गांधी का संबंध स्वतंत्रता संग्राम में परस्पर पूरक रहा, जिसने इस आंदोलन को एक व्यापक, संगठित और जनाधारित स्वरूप प्रदान किया। यह अध्ययन भाषा की उस निर्णायक भूमिका को रेखांकित करता है, जो किसी भी राष्ट्रीय आंदोलन के निर्माण और सफलता में निहित होती है।

बीजशब्द: हिन्दी भाषा,भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, चेतना,जनसंचार ,महात्मा गांधी , सत्याग्रह, सांस्कृतिक स्वाधीनता

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आधुनिक भारतीय इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और जटिल प्रक्रिया थी, जिसमें केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का उद्देश्य ही नहीं था, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक पुनर्जागरण की व्यापक आकांक्षा भी निहित थी। यह संघर्ष अनेक स्तरों पर संचालित हुआ–राजनीतिक आंदोलनों, सामाजिक सुधारों, आर्थिक प्रतिरोध और सांस्कृतिक पुनर्स्थापन के माध्यम से। इस व्यापक आंदोलन में भाषा, विशेषतः हिन्दी भाषा, ने एक अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका निभाई। हिन्दी केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं रही, बल्कि यह राष्ट्रीय चेतना के निर्माण, जनसामान्य के जागरण और औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध वैचारिक प्रतिरोध का सशक्त उपकरण सिद्ध हुई।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन भारत में अपनी प्रशासनिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक नीतियों के माध्यम से अपनी सत्ता को सुदृढ़ कर रहा था, तब भारतीय समाज में एक प्रकार की भाषायी और सांस्कृतिक दुविधा उत्पन्न हो रही थी। अंग्रेज़ी भाषा को शासन और उच्च शिक्षा का माध्यम बनाया गया, जिससे एक ओर सीमित शिक्षित वर्ग का निर्माण हुआ, वहीं दूसरी ओर विशाल जनसमूह इससे वंचित रह गया। ऐसी परिस्थिति में हिन्दी भाषा ने एक सेतु के रूप में कार्य किया, जिसने शिक्षित और अशिक्षित, ग्रामीण और शहरी, विभिन्न जातीय और क्षेत्रीय समुदायों के बीच संवाद स्थापित करने की क्षमता प्रदान की। इस संदर्भ में महात्मा गांधी का यह कहना अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है कि किसी भी राष्ट्र की आत्मा उसकी जनभाषा में ही निहित होती है। भारतीय स्वंत्रतता संग्राम के समय काल में हिंदी भाषा ने इस विचार को बार बार अधिक पुष्ट किया, हिंदी भाषा के योगदान को हिंदी भाषा के साहित्यकारों के अलावा समकालीन इतिहासकारों एवं स्वंत्रता सेनानियों ने भी उल्लेख किया है जो कि उन के लेखन में परिलक्षित होता है ।

हिन्दी भाषा के योगदान को आकस्मिक उदय के रूप में न देखकर इसे एक अविरत और निरंतर प्रक्रिया के रूप में देखन होगा, साथ ही यह एक लंबी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया का परिणाम था। मध्यकालीन भक्ति आंदोलन के दौरान हिन्दी ने लोकभाषा के रूप में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई थी। संत कवियों ने इसे जन-जीवन की भाषा बनाकर धार्मिक और सामाजिक विचारों के प्रसार का माध्यम बनाया। इसी परंपरा का विकास आधुनिक काल में हिन्दी नवजागरण के रूप में हुआ, जिसमें हिन्दी को एक आधुनिक, मानकीकृत और राष्ट्रव्यापी भाषा के रूप में स्थापित करने के प्रयास किए गए। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में हिन्दी भाषा का महत्व इस तथ्य में निहित है कि इसने राष्ट्रीय आंदोलन को व्यापक जनाधार प्रदान किया। जब तक स्वतंत्रता का विचार केवल अंग्रेज़ी-शिक्षित अभिजात वर्ग तक सीमित था, तब तक वह एक सीमित राजनीतिक विमर्श बना रहा। किन्तु जब यही विचार हिन्दी के माध्यम से जनसाधारण तक पहुँचा, तब यह एक जनांदोलन का रूप धारण कर सका। इस संदर्भ में रामविलास शर्मा का यह मत उल्लेखनीय है कि "हिन्दी भाषा ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को जनांदोलन में परिवर्तित करने का कार्य किया।" रामविलास जी हिन्दी भाषा की उस केंद्रीय भूमिका की पुष्टि करते हैं , जिसने स्वतंत्रता संग्राम को व्यापक सामाजिक आधार प्रदान किया। हिंदी भाषा के माध्यम से न केवल उत्तर भारत में बल्कि देश के अन्य क्षेत्रों में भी स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने विचारों को प्रसारित और प्रचारित किया।

हिन्दी पत्रकारिता ने इस प्रक्रिया में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं ने न केवल राजनीतिक घटनाओं की जानकारी दी, बल्कि उन्होंने राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने, ब्रिटिश शासन की नीतियों की आलोचना करने और जनता को संगठित करने का कार्य भी किया। हिन्दी में प्रकाशित लेखों, संपादकीयों और कविताओं ने लोगों के मन में स्वतंत्रता की आकांक्षा को प्रबल किया। इस प्रकार हिन्दी पत्रकारिता स्वतंत्रता संग्राम की वैचारिक रीढ़ बनकर उभरी। इसी प्रकार हिन्दी साहित्य ने भी स्वतंत्रता आंदोलन को सांस्कृतिक और भावनात्मक आधार प्रदान किया। साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से देशभक्ति, त्याग, बलिदान और सामाजिक न्याय के आदर्शों को जनमानस में स्थापित किया। कविताएँ, कहानियाँ और उपन्यास केवल साहित्यिक कृतियाँ नहीं थे, बल्कि वे स्वतंत्रता संग्राम के प्रेरणास्त्रोत भी थे। इन रचनाओं ने लोगों के भीतर आत्मगौरव और राष्ट्रीय पहचान की भावना को सुदृढ़ किया।

हिन्दी भाषा का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह था कि यह जनसंचार का अत्यंत प्रभावी माध्यम सिद्ध हुई। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान आयोजित सभाओं, जुलूसों और आंदोलनों में हिन्दी का व्यापक प्रयोग हुआ। नेताओं के भाषण, नारों और गीतों के माध्यम से स्वतंत्रता का संदेश सीधे जनता तक पहुँचा। हिन्दी की सरलता और व्यापकता ने इसे इस कार्य के लिए अत्यंत उपयुक्त बना दिया। यद्यपि हिन्दी भाषा ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, तथापि इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई थीं। भारत की भाषायी विविधता के कारण हिन्दी को सर्वमान्य भाषा के रूप में स्वीकार करना सरल नहीं था। इसके बावजूद हिन्दी ने एक संपर्क भाषा के रूप में अपनी उपयोगिता सिद्ध की और राष्ट्रीय आंदोलन को एकीकृत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी भाषा की भूमिका बहुआयामी और अत्यंत महत्वपूर्ण थी। इसने न केवल संप्रेषण का माध्यम प्रदान किया, बल्कि यह राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और सामाजिक एकता का आधार भी बनी। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य इसी बहुआयामी भूमिका का विश्लेषण करना है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम केवल राजनीतिक संघर्ष तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक व्यापक सांस्कृतिक और वैचारिक आंदोलन भी था, जिसमें हिन्दी भाषा के साहित्य ने अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक भूमिका निभाई। हिन्दी साहित्य ने न केवल स्वतंत्रता की चेतना को अभिव्यक्त किया, बल्कि इसने जनमानस में राष्ट्रीय भावना, आत्मगौरव और प्रतिरोध की चेतना को भी सशक्त रूप से स्थापित किया। साहित्य इस आंदोलन का वैचारिक आधार बना, जिसने लोगों को न केवल सोचने के लिए प्रेरित किया, बल्कि उन्हें सक्रिय रूप से संघर्ष में भाग लेने के लिए भी प्रेरित किया।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में हिन्दी भाषा के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का उदय स्पष्ट परिलक्षित होता है। इस काल में साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज की दासता, शोषण और अन्याय को उजागर किया तथा उसके प्रति सचेत किया । भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिन्दी साहित्य को आधुनिक दिशा प्रदान करते हुए राष्ट्रीय चेतना का संचार किया। उनका यह कथन–''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल'' , केवल भाषायी आग्रह नहीं था, बल्कि यह सांस्कृतिक स्वतंत्रता का भी उद्घोष था। भारतेंदु युग में साहित्य सामाजिक और राजनीतिक चेतना का माध्यम बन गया, जिसने स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि तैयार की । बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में हिन्दी कविता और गद्य दोनों में राष्ट्रवादी स्वर और अधिक प्रबल हो गया ।मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं ने भारतीय इतिहास और संस्कृति के गौरव को पुनर्स्थापित करने का कार्य किया। उनकी कृति भारत-भारती ने जनमानस में राष्ट्रीयता की भावना को जागृत किया। इस संदर्भ में उनकी पंक्ति–''हम कौन थे, क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी'' – भारतीय समाज को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करती है और उसे अपने गौरवपूर्ण अतीत की ओर पुनः देखने के लिए बाध्य करती है। यह साहित्य केवल अतीत का स्मरण नहीं था, बल्कि यह भविष्य के निर्माण का भी मार्ग प्रशस्त कर रहा था।

इसी प्रकार हिन्दी काव्य में वीरता और बलिदान की भावना को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया गया। सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता ''झाँसी की रानी'' स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अत्यंत लोकप्रिय हुई। उनकी प्रसिद्ध पंक्ति–''खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी'' ने जनमानस में साहस, संघर्ष और बलिदान की भावना को जागृत किया। यह कविता केवल ऐतिहासिक वर्णन नहीं थी, बल्कि यह एक प्रेरणास्त्रोत बन गई, जिसने विशेषकर युवाओं और महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। हिन्दी गद्य साहित्य, विशेषकर उपन्यास और कहानियों ने भी स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।प्रेमचंद ने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज की वास्तविक समस्याओं–जैसे गरीबी, शोषण, सामाजिक असमानता और औपनिवेशिक अत्याचार– को उजागर किया। उनका साहित्य यथार्थवाद का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें आम आदमी के जीवन की पीड़ा और संघर्ष को चित्रित किया गया है। इस संदर्भ में उनका यह कथन उल्लेखनीय है कि ''साहित्य समाज का दर्पण होता है।'' अर्थात् साहित्य केवल कल्पना नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ का प्रतिबिंब भी है। प्रेमचंद की रचनाओं ने लोगों को यह समझने में सहायता की कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक परिवर्तन नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और समानता की भी मांग करती है।

इसी क्रम में हिन्दी साहित्य में क्रांतिकारी चेतना का भी विकास हुआ।रामधारी सिंह दिनकर की कविताओं में ओज, वीरता और विद्रोह का स्वर प्रमुख रूप से दिखाई देता है। उनकी पंक्ति–''सिंहासन खाली करो कि जनता आती है''–जनसत्ता और लोकतांत्रिक चेतना का सशक्त उद्घोष है। दिनकर की कविताएँ केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं थीं, बल्कि वे जनांदोलन की आवाज बन गईं, जिसने लोगों को अन्याय के विरुद्ध खड़े होने के लिए प्रेरित किया। हिन्दी साहित्य का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी था कि इसने स्वतंत्रता संग्राम को भावनात्मक और सांस्कृतिक आधार प्रदान किया। साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीय एकता, त्याग और बलिदान के आदर्शों को स्थापित किया। इस संदर्भ में रामविलास शर्मा का यह मत उल्लेखनीय है कि ''हिन्दी साहित्य ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को वैचारिक और सांस्कृतिक आधार प्रदान किया।'' हिंदी भाषा ने वो काम किया जो तात्कालिक समय की अपरिहार्य आवश्यकता थी , जिसने स्वतंत्रता संग्राम को केवल राजनीतिक आंदोलन न रहने देकर उसे एक सांस्कृतिक आंदोलन में परिवर्तित कर दिया।

इसके अतिरिक्त हिन्दी साहित्य ने विभिन्न वर्गों–किसानों, मजदूरों, महिलाओं और युवाओं–को भी स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ने का कार्य किया। साहित्य ने उनकी समस्याओं को स्वर दिया और उन्हें यह एहसास कराया कि वे भी इस संघर्ष का अभिन्न अंग हैं। इस प्रकार हिन्दी साहित्य ने स्वतंत्रता संग्राम को समावेशी और व्यापक स्वरूप प्रदान किया। हिन्दी साहित्य ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुआयामी भूमिका निभाई। इसने न केवल राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया, बल्कि यह आंदोलन को वैचारिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक आधार प्रदान करने में भी सफल रहा। हिन्दी साहित्य ने स्वतंत्रता संग्राम को एक जनांदोलन बनाने में केंद्रीय भूमिका निभाई, और यह सिद्ध किया कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय निर्माण का एक सशक्त माध्यम भी है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा ने जनसंचार के एक प्रभावी, गतिशील और वैचारिक माध्यम के रूप में केंद्रीय भूमिका निभाई। जनसंचार यहाँ केवल सूचना के प्रसार का उपकरण नहीं था, बल्कि यह राजनीतिक चेतना के निर्माण, सामाजिक लामबंदी और औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध वैचारिक प्रतिरोध का साधन भी था। इस संदर्भ में हिन्दी भाषा ने उस सेतु का कार्य किया, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन को सीमित अभिजात वर्ग से निकालकर व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचाया और उसे एक सशक्त जनांदोलन में रूपांतरित किया। औपनिवेशिक शासन के दौरान अंग्रेज़ी भाषा प्रशासन, न्याय और उच्च शिक्षा की भाषा के रूप में स्थापित थी, जिससे वह स्वाभाविक रूप से एक सीमित वर्ग तक ही सीमित रही। इसके विपरीत हिन्दी भाषा व्यापक जनसमूह द्वारा समझी जाने वाली

भाषा थी, जिसने संचार की लोकतांत्रिक प्रक्रिया को संभव बनाया। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि हिन्दी ने स्वतंत्रता संग्राम के विमर्श को ''लोक'' के स्तर तक पहुँचाया। सभाओं, जुलूसों, सत्याग्रहों और आंदोलनों में हिन्दी के प्रयोग ने राजनीतिक विचारों को सुलभ और प्रभावी बनाया, जिससे आम जनता न केवल श्रोता रही, बल्कि सक्रिय सहभागी भी बनी।

इस संदर्भ में महात्मा गांधी का यह विचार विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि ''जनता से संवाद उसकी अपनी भाषा में ही संभव है।'' गांधीजी का यह दृष्टिकोण केवल भाषायी चयन नहीं था, बल्कि यह एक राजनीतिक रणनीति भी थी, जिसने स्वतंत्रता संग्राम को जनाधारित स्वरूप प्रदान किया। हिन्दी के माध्यम से उन्होंने सत्याग्रह, असहयोग और स्वदेशी जैसे जटिल राजनीतिक विचारों को सरल रूप में प्रस्तुत किया, जिससे वे व्यापक जनमानस द्वारा समझे और अपनाए जा सके। हिन्दी भाषा की शक्ति केवल उसके व्यापक प्रयोग में ही नहीं, बल्कि उसकी भावनात्मक और सांस्कृतिक अपील में भी निहित थी। जनसंचार के विभिन्न माध्यमों–जैसे नारे, गीत, कविताएँ और लोकभाषाई अभिव्यक्तियाँ–के माध्यम से हिन्दी ने स्वतंत्रता संग्राम को भावनात्मक ऊर्जा प्रदान की। ''वन्दे मातरम्'' और ''भारत माता की जय'' जैसे नारे केवल राजनीतिक घोष नहीं थे, बल्कि वे राष्ट्रीय अस्मिता और सामूहिक चेतना के प्रतीक बन गए। इस संदर्भ में रामधारी सिंह दिनकर का यह कथन प्रासंगिक है कि ''शब्दों में वह शक्ति होती है जो जनमानस को आंदोलित कर सकती है।'' दिनकर जी ने हिन्दी भाषा की उस अंतर्निहित सामर्थ्य को रेखांकित किया , जिसने स्वतंत्रता संग्राम को केवल वैचारिक नहीं, बल्कि भावनात्मक स्तर पर भी सशक्त बनाया।

इसके अतिरिक्त हिन्दी भाषा ने लिखित जनसंचार के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिन्दी में प्रकाशित समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं, पर्चों और घोषणापत्रों ने स्वतंत्रता संग्राम के विचारों को दूर-दराज़ के क्षेत्रों तक पहुँचाया। इन माध्यमों ने न केवल सूचना का प्रसार किया, बल्कि उन्होंने औपनिवेशिक नीतियों की आलोचना करते हुए वैकल्पिक राष्ट्रीय दृष्टिकोण को भी प्रस्तुत किया। इस प्रकार हिन्दी जनसंचार का माध्यम केवल निष्क्रिय सूचना-वितरण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह सक्रिय वैचारिक हस्तक्षेप का उपकरण बन गया। विश्लेषणात्मक दृष्टि से देखा जाए तो हिन्दी भाषा ने जनसंचार की प्रक्रिया को लोकतांत्रिक बनाया, जिसमें संवाद एकतरफा न होकर सहभागितापूर्ण हो गया। इसने विभिन्न सामाजिक वर्गों–किसानों, मजदूरों, महिलाओं और युवाओं–को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिन्दी ने भाषायी विविधता के बीच एक संपर्क भाषा के रूप में कार्य करते हुए राष्ट्रीय एकता को भी सुदृढ़ किया।

इतिहास लेखन और हिंदी साहित्य से सम्बंधित लेखन के विश्लेषण के आधार पर यह कहना उचित होगा की हिन्दी भाषा ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जनसंचार के एक प्रभावी माध्यम के रूप में केवल सहायक भूमिका ही नहीं निभाई, बल्कि यह आंदोलन के वैचारिक प्रसार, सामाजिक संगठन और भावनात्मक ऊर्जा के निर्माण में केन्द्रीय तत्व के रूप में सक्रिय रही। इसने स्वतंत्रता संग्राम को जनसाधारण के जीवन का हिस्सा बनाया और उसे एक व्यापक, संगठित और सशक्त जनांदोलन में परिवर्तित करने में निर्णायक योगदान दिया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में महात्मा गांधी का योगदान केवल राजनीतिक नेतृत्व तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने भाषा के प्रश्न को राष्ट्रीय आंदोलन के केंद्र में स्थापित किया। गांधीजी ने हिन्दी को न केवल संप्रेषण का माध्यम माना, बल्कि इसे राष्ट्रीय एकता, जनसंपर्क, सांस्कृतिक स्वाधीनता और राजनीतिक लामबंदी का आधार भी समझा। उनके लिए भाषा एक तटस्थ साधन नहीं थी, बल्कि यह एक सक्रिय राजनीतिक उपकरण थी, जिसके माध्यम से जनता को संगठित किया जा सकता था और औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध वैचारिक प्रतिरोध को सुदृढ़ किया जा सकता था। गांधीजी का मानना था कि किसी भी राष्ट्रीय आंदोलन की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसकी भाषा जनता की भाषा हो। इसी कारण उन्होंने हिन्दी को जनसंचार का प्रमुख माध्यम बनाया। उनका यह प्रसिद्ध कथन–"राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा होता है"–केवल एक भाषायी आग्रह नहीं, बल्कि राष्ट्रीय अस्मिता और आत्मनिर्भरता का सशक्त उद्घोष था। गांधीजी ने यह समझ लिया था कि यदि स्वतंत्रता संग्राम को व्यापक जनाधार प्रदान करना है, तो उसे अंग्रेज़ी जैसी सीमित भाषा के दायरे से बाहर निकालकर जनभाषा में प्रस्तुत करना आवश्यक है।

इस संदर्भ में गांधीजी का एक अन्य विचार भी अत्यंत महत्वपूर्ण है कि "जनता से संवाद उसकी अपनी भाषा में ही संभव है।" यह कथन उनके राजनीतिक दृष्टिकोण की व्यावहारिकता को दर्शाता है। गांधीजी ने सत्याग्रह, असहयोग और स्वदेशी जैसे जटिल राजनीतिक सिद्धांतों को हिन्दी के माध्यम से इस प्रकार प्रस्तुत किया कि वे आम जनता के लिए बोधगम्य बन गए। इस प्रकार हिन्दी ने राजनीतिक विचारधारा को केवल अभिजात वर्ग तक सीमित नहीं रहने दिया, बल्कि उसे जनसामान्य के अनुभव और चेतना का हिस्सा बना दिया। विश्लेषणात्मक दृष्टि से देखा जाए तो गांधीजी का हिन्दी के प्रति आग्रह केवल संचार की सुविधा तक सीमित नहीं था, बल्कि यह औपनिवेशिक मानसिकता के विरुद्ध एक वैचारिक प्रतिरोध भी था। अंग्रेज़ी भाषा औपनिवेशिक सत्ता के प्रभुत्व का प्रतीक थी, जबकि हिन्दी स्वदेशी चेतना और सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता का प्रतिनिधित्व करती थी। इस

प्रकार हिन्दी का प्रयोग एक प्रकार से मानसिक दासता से मुक्ति का प्रयास भी था। गांधीजी के लिए भाषा का प्रश्न सांस्कृतिक स्वराज से गहराई से जुड़ा हुआ था। गांधीजी ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व्यावहारिक और संस्थागत प्रयास भी किए। उन्होंने हिन्दी को शिक्षा, प्रशासन और जनसंचार के माध्यम के रूप में स्थापित करने का समर्थन किया । गांधी जी के विचार उनकी उस व्यापक दृष्टि को दर्शाते हैं , जिसमें भाषा को सामाजिक और सांस्कृतिक एकता के साधन के रूप में देखा गया है ।

हिन्दी भाषा के माध्यम से गांधीजी ने स्वतंत्रता संग्राम को एक नैतिक और जनाधारित आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया। उनके भाषणों, लेखों और आंदोलनों में हिन्दी का प्रयोग केवल सूचना देने के लिए नहीं, बल्कि प्रेरित करने, संगठित करने और नैतिक चेतना जगाने के लिए किया गया। हिन्दी की सरलता और व्यापकता ने इसे इस कार्य के लिए अत्यंत उपयुक्त बना दिया। महात्मा गांधी और हिन्दी भाषा का संबंध केवल भाषायी नहीं, बल्कि गहराई से राजनीतिक, सांस्कृतिक और वैचारिक था। गांधीजी ने हिन्दी को एक ऐसे उपकरण के रूप में स्थापित किया, जिसने स्वतंत्रता संग्राम को व्यापक जनाधार, वैचारिक स्पष्टता और सांस्कृतिक गहराई प्रदान की। इस प्रकार हिन्दी भाषा गांधीजी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम की आत्मा के रूप में उभरी, जिसने आंदोलन को एक सशक्त और समावेशी जनांदोलन में परिवर्तित करने में निर्णायक भूमिका निभाई।

महात्मा गांधी के भाषा संबंधी विचारों को समझने के लिए उनके लेखन, भाषणों, पुस्तकों और संपादित पत्र-पत्रिकाओं का विश्लेषण अत्यंत आवश्यक है। गांधीजी के लिए भाषा केवल अभिव्यक्ति का साधन नहीं थी, बल्कि यह राष्ट्रीय पुनर्निर्माण, सांस्कृतिक स्वाधीनता और जनसंचार की एक संगठित राजनीतिक रणनीति का हिस्सा थी। उनके द्वारा प्रयुक्त हिन्दी एक ऐसी भाषा थी, जिसका उद्देश्य विविध भारतीय समाज को एक साझा वैचारिक मंच पर संगठित करना था। गांधीजी की पुस्तक हिन्द स्वराज (१९०९) इस दृष्टि से एक मूलभूत ग्रंथ है, जिसमें उनके राजनीतिक और सांस्कृतिक विचारों की आधारशिला स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यद्यपि यह मूलतः गुजराती में लिखी गई थी, परन्तु इसका हिन्दी अनुवाद और प्रसार अत्यंत व्यापक हुआ, जो यह दर्शाता है कि गांधीजी अपने विचारों को जनभाषा में उपलब्ध कराना चाहते थे। इस ग्रंथ में उन्होंने आधुनिक सभ्यता की आलोचना करते हुए स्वराज की अवधारणा को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे आत्मानुशासन और नैतिक पुनर्निर्माण से जोड़ा। उनका यह विचार–''स्वराज का अर्थ केवल अंग्रेज़ों के जाने से नहीं, बल्कि आत्म-शासन से है'' गांधी जी के इसी व्यापक दृष्टिकोण ने जनमानस के बीच उनके विचारों को पहुँचाने में विशेष दिशा प्रदान की । हिन्दी के माध्यम से इस विचार का प्रसार करने से यह दार्शनिक

विमर्श भी जनसामान्य के लिए सुलभ बन गया। गांधीजी द्वारा संपादित नवजीवन (१९१९) हिन्दी जनसंचार का एक अत्यंत प्रभावी माध्यम था, जिसमें उनके लेखों की भाषा सरल, स्पष्ट और नैतिक आग्रहों से युक्त थी। नवजीवन के माध्यम से उन्होंने स्वदेशी, सत्याग्रह और सामाजिक सुधार जैसे विषयों को सीधे जनता से जोड़ा। इन लेखों की विशेषता यह थी कि इनमें जटिल राजनीतिक अवधारणाओं को दैनिक जीवन के संदर्भों में प्रस्तुत किया गया, जिससे हिन्दी भाषा एक जीवंत संवाद का माध्यम बन गई। विश्लेषणात्मक रूप से देखा जाए तो नवजीवन में प्रयुक्त हिन्दी केवल सूचना देने का माध्यम नहीं थी, बल्कि यह एक नैतिक-राजनीतिक चेतना के निर्माण का उपकरण थी।

इसी प्रकार यंग इंडिया और हरिजन (१९३३ से) में प्रकाशित गांधीजी के लेख भाषा और राजनीति के संबंध को और स्पष्ट करते हैं। हरिजन में उन्होंने विशेष रूप से हिन्दी और हिन्दुस्तानी को राष्ट्रीय एकता के आधार के रूप में प्रस्तुत किया। एक लेख में उनका यह कथन मिलता है कि ‘‘राष्ट्र की एकता के लिए ऐसी भाषा आवश्यक है, जिसे अधिकतम लोग समझ सकें।’’उनके लेखन में भाषायी दृष्टिकोण की व्यावहारिकता और लोकतांत्रिकता को रेखांकित किया जा सकता है। गांधीजी ने भाषा को एक समावेशी उपकरण के रूप में देखा , जो विभिन्न धार्मिक, क्षेत्रीय और सामाजिक समूहों को जोड़ने में सक्षम है।

गांधीजी के सार्वजनिक भाषणों में भी हिन्दी का प्रयोग एक सुविचारित राजनीतिक रणनीति के रूप में किया गया। विशेषकर चंपारण सत्याग्रह (१९१७), असहयोग आंदोलन (१९२०) और नमक सत्याग्रह (१९३०) के दौरान उनके भाषणों में हिन्दी का व्यापक प्रयोग देखने को मिलता है। इन भाषणों में उनकी भाषा अत्यंत सरल, संवादात्मक और प्रेरणादायक होती थी। उनका यह कथन–‘‘मैं जनता से उसी भाषा में बात करना चाहता हूँ, जिसे वह समझती है’’–उनकी जनोन्मुखी राजनीति और संचार की रणनीति को स्पष्ट करता है। यहाँ हिन्दी केवल एक भाषायी माध्यम नहीं, बल्कि जनसंपर्क की एक अनिवार्य शर्त बन जाती है। विश्लेषणात्मक दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है कि गांधीजी ने हिन्दी को औपनिवेशिक भाषायी प्रभुत्व के विरुद्ध एक वैचारिक प्रतिरोध के रूप में स्थापित किया। अंग्रेज़ी भाषा औपनिवेशिक सत्ता के प्रभुत्व और अभिजात वर्ग की सीमितता का प्रतीक थी, जबकि हिन्दी व्यापक जनसमुदाय की भाषा के रूप में लोकतांत्रिक चेतना का प्रतिनिधित्व करती थी। इस प्रकार हिन्दी का प्रयोग एक प्रकार से मानसिक दासता के विरुद्ध संघर्ष का भी माध्यम बन गया।

अतः समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि गांधीजी के लेखन, भाषणों और पत्र-पत्रिकाओं में हिन्दी भाषा का प्रयोग एक संगठित, बहुआयामी और वैचारिक परियोजना का

हिस्सा था। उन्होंने हिन्दी को केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक स्वाधीनता और राजनीतिक जागरण के उपकरण के रूप में स्थापित किया। इस प्रकार हिन्दी भाषा गांधीजी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम की वैचारिक और जनाधारित संरचना का एक अभिन्न अंग बन गई।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यह संघर्ष केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक व्यापक सांस्कृतिक और वैचारिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया भी था। इस परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा ने एक प्रभावी माध्यम के रूप में कार्य किया, किंतु इसका वास्तविक ऐतिहासिक महत्व विशेषतः महात्मा गांधी के संदर्भ में ही पूर्णतः स्पष्ट होता है। गांधीजी ने हिन्दी को केवल संप्रेषण का साधन न मानकर इसे राष्ट्रीय आंदोलन की आधारभूत शक्ति के रूप में रूपांतरित किया। हिन्दी भाषा की जनसुलभता ने उसे व्यापक जनसमूह तक पहुँचने योग्य बनाया, परन्तु इस संभाव्यता को संगठित और प्रभावी रूप देने का कार्य गांधीजी की राजनीतिक और सामाजिक दृष्टि ने किया। उन्होंने हिन्दी के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम के विचारों को सरल, बोधगम्य और जनोन्मुख बनाया, जिससे आंदोलन अभिजात वर्ग की सीमाओं से बाहर निकलकर जनसाधारण के जीवन का हिस्सा बन सका। इस प्रकार हिन्दी भाषा गांधीजी के नेतृत्व में जनसंचार का माध्यम भर नहीं रही, बल्कि यह जनसंगठन और वैचारिक एकता का उपकरण बन गई।

हिन्दी साहित्य, पत्रकारिता और जनसंचार के विभिन्न रूपों ने इस प्रक्रिया को सुदृढ़ किया, परंतु इन सबका प्रभाव तब अधिक व्यापक हुआ जब वे गांधीवादी विचारधारा से जुड़े। सत्य, अहिंसा और स्वदेशी जैसे सिद्धांत हिन्दी के माध्यम से जनमानस में स्थापित हुए, जिससे स्वतंत्रता संग्राम को नैतिक और वैचारिक आधार प्राप्त हुआ। इस दृष्टि से हिन्दी भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं रही, बल्कि यह एक वैचारिक संरचना का अंग बन गई, जिसने आंदोलन को गहराई और स्थायित्व प्रदान किया। आलोचनात्मक रूप से यह भी स्वीकार्य है कि भारत की भाषायी विविधता के कारण हिन्दी का प्रसार एक जटिल प्रक्रिया थी, किन्तु गांधीजी की समावेशी दृष्टिकोण की अवधारणा ने भाषा को विभाजन के बजाय एकता के साधन के रूप में प्रस्तुत किया। इससे हिन्दी एक संपर्क भाषा के रूप में उभरी, जिसने विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों को एक साझा राष्ट्रीय उद्देश्य से जोड़ने में सहायता की।

अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी भाषा की भूमिका को समझने के लिए महात्मा गांधी का संदर्भ अनिवार्य है। गांधीजी ने हिन्दी को एक साधारण भाषा से आगे बढ़ाकर उसे राष्ट्रीय चेतना, जनसंगठन और सांस्कृतिक

स्वाधीनता का सक्रिय माध्यम बना दिया। इस प्रकार हिन्दी भाषा और गांधीजी का संबंध न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह यह भी सिद्ध करता है कि भाषा किसी भी जनांदोलन की संरचना और सफलता में एक निर्णायक भूमिका निभा सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

2. *गांधी, मोहनदास करमचंद — हिन्द स्वराज — नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 2009 (पुनर्मुद्रण)*
3. *गांधी, मोहनदास करमचंद — सत्य के प्रयोग (आत्मकथा) — नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 2015*
4. *गांधी, मोहनदास करमचंद — हिन्दी, हिन्दुस्तानी और राष्ट्रभाषा — नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 2012*
5. *गांधी, मोहनदास करमचंद — रचनात्मक कार्यक्रम: उसका स्वरूप और स्थान — नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 2008*
6. *गुप्त, मैथिलीशरण — भारत-भारती — लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2010*
7. *चन्द्र, बिपिन — भारत का स्वतंत्रता संग्राम — हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2010*
8. *दिनकर, रामधारी सिंह — संस्कृति के चार अध्याय — राजपाल एंड संस, नई दिल्ली, 2009*
9. *द्विवेदी, हजारी प्रसाद — हिन्दी साहित्य की भूमिका — राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001*
10. *तारा चंद — भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास — प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, 2005*
11. *प्रेमचंद — कर्मभूमि — हंस प्रकाशन, वाराणसी, 2012*
12. *मिश्र, विद्यानिवास — भारतीय भाषाएँ और राष्ट्रीय एकता — भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1995*
13. *शर्मा, रामविलास — हिन्दी भाषा और राष्ट्रीयता — राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990*
14. *शुक्ल, रामचन्द्र — हिन्दी साहित्य का इतिहास — लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2012*

***